नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

खाड़ी युद्ध और भारतीय अर्थव्यवस्था

वैश्विक अर्थव्यवस्था इस समय अनेक चुनौतियों से जूझ रही है. भू-राजनीतिक तनाव, ऊर्जा की ऊंची कीमतें, कमजोर वैश्विक मांग और व्यापारिक अनिश्चितताओं के बीच दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के सामने विकास की रफ्तार बनाए रखना चुनौती बना हुआ है. ऐसे समय में भारतीय अर्थव्यवस्था का 7.8 प्रतिशत की दर से बढ़ना निश्चित रूप से उत्साहजनक है. चालू वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही में दर्ज यह विकास दर न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का प्रमाण है, बल्कि वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में भारत की बढ़ती भूमिका को भी रेखांकित करती है.

पहली तिमाही में 7.8 प्रतिशत की जीडीपी वृद्धि दर भारतीय रिजर्व बैंक के सात प्रतिशत के अनुमान से भी अधिक रही. हालांकि पिछली वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही में विकास दर 8.6 प्रतिशत थी, लेकिन वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए नई वित्त वर्ष की पहली तिमाही का प्रदर्शन भी महत्वपूर्ण है. स्थिर कीमतों पर वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद 81.36 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 75.46 लाख करोड़ रुपये था. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे मिसाल कायम करने वाला प्रदर्शन बताया है.

इस विकास की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें केवल सरकारी खर्च का योगदान नहीं है. मैन्यूफैक्चरिंग और सेवा क्षेत्र ने विकास को गति दी है. घरेलू मांग में मजबूती इसका दूसरा बड़ा आधार है. आटोमोबाइल बिक्री से लेकर विभिन्न उपभोक्ता वस्तुओं की मांग में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में तेजी दिखाई दे रही है. इसका सीधा अर्थ है कि बाजार में गतिविधियां बढ़ रही हैं और लोगों की क्रय शक्ति में सुधार हो रहा है. जीएसटी संग्रह भी अर्थव्यवस्था की इस तस्वीर की पुष्टि करता है. पिछले छह महीनों में जीएसटी संग्रह औसतन करीब 14 प्रतिशत की दर से बढ़ा है. जीएसटी मुख्य रूप से वस्तुओं और सेवाओं के कारोबार पर लगाया जाता है. इसलिए कर संग्रह में लगातार हो रही वृद्धि को बाजार में बढ़ती कारोबारी गतिविधियों और खपत के संकेत के रूप में देखा जा सकता है. जब उपभोक्ता बाजार में आता है, खरीदारी बढ़ती है, व्यापार बढ़ता है और उसका प्रतिबिंब जीएसटी संग्रह में दिखाई देता है. प्रत्यक्ष कर संग्रह और विदेशी निवेश में बढ़ोतरी भी अर्थव्यवस्था के प्रति भरोसे को दर्शाती है. इस प्रदर्शन का राजनीतिक महत्व भी कम नहीं है. विपक्ष लंबे समय से अर्थव्यवस्था की दिशा को लेकर सरकार पर सवाल उठाता रहा है.

दरअसल, विपक्षी नेताओं ने कई बार दावा किया कि सरकार आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम नहीं है. ऐसे में विकास दर के ताजा आंकड़े सरकार को अपने आर्थिक प्रबंधन के पक्ष में मजबूत आधार उपलब्ध कराते हैं. हालांकि सरकार के लिए इसे राजनीतिक उपलब्धि तक सीमित करने के बजाय रोजगार, महंगाई, किसानों की आय और आम आदमी की वास्तविक क्रय शक्ति बढ़ाने पर भी निरंतर ध्यान देना जरूरी है. भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने चुनौतियां अभी समाप्त नहीं हुई हैं.

वैश्विक बाजार की अनिश्चितता, ऊर्जा कीमतें और भू-राजनीतिक तनाव आगे भी परीक्षा लेते रहेंगे. लेकिन इन परिस्थितियों में 7.8 प्रतिशत की विकास दर यह भरोसा जरूर जगाती है कि भारत की आर्थिक बुनियाद मजबूत है. दुनिया की अनिश्चितताओं के बीच विकास की यह रफ्तार भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में और अधिक प्रभावशाली स्थान दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है.

फिट इंडिया का आधार, पोषण से भरपूर आहार

योगेश कुमार गोयल

राष्ट्रीय पोषण सप्ताह (1-7 सितम्बर) पर विशेष

> यदि हम सही भोजन चुनते हैं तो हम न केवल खुद को स्वस्थ रखते हैं बल्कि अपने परिवार, समाज और राष्ट्र को भी मजबूती देते हैं. अच्छा पोषण ही सच्ची समृद्धि है और यही मानव जीवन का सबसे बड़ा निवेश भी है. स्वास्थ्य की सुरक्षा दवाओं और उपचार से अधिक अ'छे भोजन में निहित है. भारत की नई पीढ़ी धीरे-धीरे इस संदेश को आत्मसात कर रही है. आज के युवा फिटनेस और हैल्थ को लेकर सजग हैं. वे जिम और योग के साथ-साथ आहार पर भी ध्यान दे रहे हैं. यह बदलाव दर्शाता है कि भविष्य में भारत निश्चित रूप से एक पोषण सम्पन्न और स्वास्थ्य सम्पन्न राष्ट्र के रूप में उभरेगा. जब हम पोषण के महत्व को समझते हैं और उसे जीवन में उतारते हैं तो हम अपने और समाज के लिए एक स्वस्थ, खुशहाल और उज्वल भविष्य का निर्माण करते हैं.

भारत जैसे विशाल और विविधताओं वाले देश में लोगों के स्वास्थ्य और जीवनशैली को बेहतर बनाने की दिशा में अनेक प्रयास किए जाते रहे हैं. इन्हीं प्रयासों के क्रम में 1 से 7 सितम्बर तक 'राष्ट्रीय पोषण सप्ताह' मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना और यह समझाना है कि उचित और संतुलित आहार ही उत्तम स्वास्थ्य का सबसे बड़ा रहस्य है. स्वस्थ जीवन जीने के लिए पोषण को जीवन का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है. वर्ष 2026 के राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का विषय है 'पोषण की शक्ति को जानें', जो केवल भोजन से जुड़ा संदेश नहीं, जीवन की संपूर्ण गुणवत्ता को निखारने वाला मंत्र है. सही खानपान ही हमें रोगमुक्त, ऊर्जावान और दीर्घायु जीवन प्रदान करता है.

भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत खाद्य एवं पोषण बोर्ड इस सप्ताह के आयोजन का नेतृत्व करता है और हर वर्ष कोई न कोई ऐसा विषय चुनता है, जो लोगों को न केवल जागरूक करे बल्कि उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव भी लाए. पोषणयुक्त आहार केवल रोगों से बचाव का साधन नहीं है बल्कि यह हमारे कार्यक्षमता, मानसिक शांति और सामाजिक योगदान तक को प्रभावित करता है. राष्ट्रीय पोषण सप्ताह मनाने की परंपरा का इतिहास देखें तो इसकी शुरुआत 1975 में अमेरिकन डायटेटिक्स एसोसिएशन ने की थी, जिसे अब 'न्यूट्रिशन एंड डाइटेटिक्स अकादमी' के नाम से जाना जाता है. भारत सरकार ने भी इस अभियान की महत्ता को समझते हुए 1980 में इसे पूरे एक माह तक मनाना शुरू किया. हालांकि 1982 से इसे केवल सितम्बर के पहले सप्ताह तक सीमित कर दिया गया और तभी से यह निरंतर मनाया जा रहा है. इस अभियान के पीछे का विचार बहुत स्पष्ट है, लोगों में यह चेतना जागृत करना कि वे अपने खानपान पर ध्यान दें, ताजे और पौष्टिक खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता दें और जीवन को सशक्त व सुखी बनाने के लिए भोजन को दवा की तरह अपनाएं. यदि स्वास्थ्य की दृष्टि से देखें तो पोषण का महत्व अपार है. शरीर को शक्ति, ऊर्जा और प्रतिरोधक क्षमता देने वाला सबसे बड़ा साधन आहार ही है. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पोषण का अर्थ शरीर की आवश्यकता के अनुसार संतुलित मात्रा में आहार का सेवन करना है. यदि आहार संतुलित और विविध पोषक तत्वों से युक्त होगा तो व्यक्ति निरोग और ऊर्जावान रहेगा. अ'छी पोषण स्थिति न केवल व्यक्ति को कार्यकुशल बनाती है बल्कि उसके मानसिक विकास, सोचने-समझने की क्षमता और सामाजिक योगदान को भी मजबूत करती है. वास्तव में अ'छा पोषण किसी भी राष्ट्र की प्रगति की नींव है. स्वस्थ नागरिक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं और इसी दृष्टि से पोषण को स्वास्थ्य और कल्याण का केन्द्र बिंदु माना गया है. हमारे भोजन में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन, खनिज लवण और जल जैसे तत्व जब संतुलित मात्रा में उपस्थित रहते हैं तो शरीर तंदुरुस्त और सक्रिय बना रहता है. आज विज्ञान और चिकित्सा जगत के शोध इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि संतुलित आहार जीवन की गुणवत्ता को सुधारने का सबसे सरल और सुलभ उपाय है. आधुनिक युग में लोगों की जीवनशैली बदल रही है लेकिन यदि हम जागरूकता के साथ संतुलित भोजन की आदतें विकसित करें तो हर स्थिति में बेहतर स्वास्थ्य संभव है. भारत में यह उत्साहजनक संकेत है कि पिछले कुछ वर्षों में पोषण और स्वास्थ्य को लेकर जनजागरूकता तेजी से बढ़ी है. लोग अब इस बात को पहले से अधिक समझने लगे हैं कि फास्टफूड और प्रसंस्कृत भोजन के बजाय घर का बना पारंपरिक भोजन अधिक लाभकारी है. सरकार ने भी पोषण अभियान जैसी योजनाओं के माध्यम से लोगों को यह संदेश दिया है कि अच्छा भोजन केवल अमीरों के लिए नहीं बल्कि हर व्यक्ति का अधिकार है. 2018 में शुरू किया गया यह अभियान ब'चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं की पोषण स्थिति सुधारने के उद्देश्य से शुरू हुआ था, जिसके अंतर्गत गांव-गांव तक लोगों को पोषण शिक्षा दी जा रही है और यह विश्वास जगाया जा रहा है कि कुपोषण जैसी समस्या पर विजय पाना असंभव नहीं है.

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

क्या सचमुच उदार है संघ का रवैया

बीजेपी को आरएसएस से अलग करके नहीं देखा जा सकता, जो कि उसका अभिभावक संगठन है. आरएसएस की पहचान उसकी गोपनीयता में निहित है. वह एक ओर वसुधैव कुटुम्बकम की बात कहता है तो दूसरी ओर ऐसे संकीर्ण सोच वाले नेताओं को भी बढ़ावा देता है, जो अपने अल्पसंख्यक विरोधी रुख के लिए पहचाने जाते हैं. यह कुछ ऐसा मामला है कि हाथी के दांत दिखाने के अलग और खाने के अलग! अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने विविधता में एकता विषय पर बोलते हुए कहा कि यदि कोई हिंदू यह सोचता है कि हिंदुस्तान में सिर्फ हिंदू ही रहने चाहिए और कोई मुसलमान नहीं रहना चाहिए, तो वह स्वयं भी हिंदू नहीं रह सकता. सहिष्णुता हिंदुओं के खून में है और यही हिंदुत्व का मूलभूत हिस्सा है. यदि संघप्रमुख की ऐसी उदारवादी धारणा है तो असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा और बंगाल के सीएम शुभेंदु अधिकारी कैसे सार्वजनिक रूप से कहते हैं कि उन्हें किसी मुस्लिम का वोट नहीं चाहिए. बीजेपी किसी मुस्लिम को उम्मीदवारी भी नहीं देती. शुरू में दिखाने के लिए एक-दो मुस्लिम नेताओं को साथ लिया गया था लेकिन बाद में उन्हें किनारे कर दिया गया. संघ प्रमुख विदेश में विविधता में एकता की बात तो कहते हैं लेकिन देश में इसके विपरीत राजनीति की जाती है. यहां लोगों को धर्म के आधार पर बांटा जाता है. वोटर लिस्ट से नाम हटाए जाते हैं. दुनिया को दिखाने के लिए विदेश जाकर अलग बातें की जाती हैं और यहां कट्टरता का पोषण किया जाता है. यदि भागवत कहते हैं कि विविधता में एकता भारत के डीएनए में है तो क्या बीजेपी इस भावना को लेकर चलती है? विदेश से आए शरणार्थियों को भारत की नागरिकता देने के लिए जो कानून बना उसमें हिंदू, सिख, पारसी आदि को शामिल किया गया लेकिन मुस्लिमों को नहीं. यह कहा गया कि उन्हें शरण लेने के लिए विश्व में 50 से अधिक मुस्लिम देश हैं, जहां वह जा सकते हैं. बीजेपी के कितने ही नेताओं का मुस्लिम विरोधी दृष्टिकोण उनके चुनावी भाषणों और वक्तव्यों में देखा जा सकता है. क्या उस पर कभी संघ प्रमुख ने आपत्ति जताई है?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

दिल्ली डायरी

शुद्धिकरण पर तेज हुई सियासत

प्रवेश कुमार मिश्र

देश की राजनीति में इन दिनों शुद्धिकरण जैसा बेहद संवेदनशील और गंभीर मुद्दा बहस का विषय बन गया है. जिसके कारण जातिगत चेतना और राजनीति के टकराव को एक बार फिर सामने ला दिया. उत्तराखंड के हल्द्वानी में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की एक रैली हुई थी, जिसके बाद वहां के रामलीला मैदान में गंगाजल छिड़ककर और हवन करके 'शुद्धिकरण' किया गया. इस एक घटना ने पूरे देश की सियासत में भूचाल ला दिया है. कांग्रेस ने इसे बेहद आक्रामक ढंग से उठाया है. राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे समेत पूरी पार्टी का आरोप है कि यह सीधे तौर पर दलित समाज और देश के एक बड़े नेता का जातिगत अपमान है. उन्होंने इसे छुआछूत की मानसिकता का प्रतीक बताते हुए कड़ा विरोध दर्ज कराया है. जबकि भाजपा और इस अनुष्ठान को करने वाले संगठन श्री राम सेना धर्मार्थ सेवा न्यास का तर्क बिल्कुल अलग है. उनका कहना है कि रैली के बाद मैदान में भारी गंदगी और शराब की खाली बोतलें मिली थीं, जिससे उस पवित्र धार्मिक स्थल की मर्यादा भंग हुई थी. उनके अनुसार, यह केवल एक सामान्य सफाई और धार्मिक शुद्धि का अनुष्ठान था. लेकिन कांग्रेस इसे जबरन जातिगत रंग देकर राजनीति कर रही है. विवाद यहीं नहीं थमा, बल्कि अब यह कानूनी लड़ाई में बदल चुका है. इस मामले को सामाजिक रूप से भड़काने के आरोप में राहुल गांधी के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज हो गई है. इसके कारण उत्तराखंड से लेकर दिल्ली तक विरोध प्रदर्शनों का दौर जारी है. ऐसे में दोनों ही दल इस मुद्दे के सहारे दलित मतदाताओं को अपने पाले में करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं.

काकरोच जनता पार्टी के दबाव में झुकी सरकार

भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की बदलती ताकत भांपकर केंद्र सरकार के रणनीतिकारों ने सीजेपी के तीखे तेवरों के आगे समझौतावादी तेवर अपनाकर केंद्र सरकार की ओर से प्रदर्शनकारियों के खिलाफ दर्ज मामलों को वापस लेने की दिशा में सकारात्मक कदम उठाए हैं. जिसके बाद सीजेपी ने 5 सितंबर को नई दिल्ली में प्रस्तावित विरोध मार्च वापस लेने का फैसला किया है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि मोदी सरकार भी झुकती है. क्योंकि परीक्षा धांधली और पेपर लीक के खिलाफ जंतर-मंतर से शुरू हुआ युवाओं का यह आक्रोश इतना बड़ा दबाव समूह बन जाएगा, इसकी कल्पना शायद किसी ने नहीं की थी. इस अनोखे संगठन के राष्ट्रव्यापी आंदोलन और चौतरफा दबाव के आगे बेबस होकर सरकार को पहले बैकफुट पर आकर तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा और अब सर्वोच्च न्यायालय में हलफनामा दाखिल करना पड़ा है.

बुलेट ट्रेन की रफ्तार बनाम आम जनता

उत्तर प्रदेश की राजनीति हमेशा से ही बड़े वादों और विकास के मेगा प्रोजेक्ट्स के इर्द-गिर्द घूमती रही है, लेकिन आगामी विधानसभा चुनावों के मद्देनज़र जो नई पटकथा लिखी जा रही है, वह रफ्तार की एक नई परिभाषा गढ़ने वाली है. सरकार ने इस बार केवल एक्सप्रेसवे और हवाई अड्डों तक सीमित न रहकर सीधे बुलेट ट्रेन को चुनावी बिसात पर उतारने की पूरी तैयारी कर ली है. रेल मंत्रालय द्वारा हाल ही में देश के अगले बड़े हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर की घोषणा ने राज्य के सियासी माहौल में एक नई चर्चा छेड़ दी है. दिल्ली से आगरा, कानपुर, लखनऊ, प्रयागराज और वाराणसी को जोड़ने वाला यह प्रस्तावित 813 किलोमीटर लंबा बुलेट ट्रेन कॉरिडोर अब केवल एक तकनीकी प्रोजेक्ट नहीं, बल्कि यूपी चुनाव का एक बेहद चमकीला और बड़ा मुद्दा बनने जा रहा है. इस मेगा प्रोजेक्ट के जरिए जनता को यह भरोसा दिलाया जा रहा है कि दिल्ली से लखनऊ का सफर महज सवा दो घंटे और वाराणसी तक की दूरी साढ़े तीन घंटे में सिमट जाएगी. सरकार इस विकास मॉडल को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि और भविष्य के विजन के रूप में पेश करने की रणनीति बना चुकी है, ताकि कानून-व्यवस्था और एक्सप्रेसवे के पुराने दावों के साथ इस अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर की चमक को भी जोड़ा जा सके.

मोहन भागवत के अमेरिकी दौरे पर देश में राजनीति

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत के अमेरिका और कनाडा दौरे ने भारत के भीतर एक नया सियासी घमासान छेड़ दिया है. संघ के शताब्दी वर्ष के वैश्विक प्रचार के तहत उन्होंने न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में भारतीय प्रवासियों को संबोधित किया. वहां उन्होंने वसुधैव कुटुंबकम और सार्वभौमिक एकता का संदेश देते हुए कहा कि हिंदुत्व की सोच किसी को बाहर करने की नहीं है. उनके इस बयान पर कांग्रेस और एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने इस पर तीखा पलटवार किया है. विपक्ष का आरोप है कि संघ विदेशों में तो उदारता और विविधता की बातें करता है, लेकिन देश के भीतर उसकी राजनीति इसके बिल्कुल विपरीत है. कर्मभूमि बनाम जन्मभूमि के संदर्भ में भागवत ने अमेरिकी मूल के भारतीयों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें भारत यानी जन्मभूमि से पहले अमेरिका यानी कर्मभूमि के प्रति वफादार होना चाहिए और वहां के नियमों का पालन करना चाहिए. इसके बाद विपक्ष के कुछ हलकों में इस बयान की भी आलोचना की गई कि यह प्रवासी भारतीयों के सामने दोहरी पहचान और वफादारी का संकट खड़ा करता है.

निशानेबाज

चर्चा में 'वन नेशन वन इलेक्शन', होगा आसान या बढ़ेगा टेंशन

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इन दिनों फिर 'वन नेशन वन इलेक्शन' की चर्चा जोर पकड़ने लगी है. मुंबई में आयोजित राउंडटेबल कॉन्फ्रेंस में 50 दिग्गजों ने इसका समर्थन किया. इस मुद्दे के समर्थकों का कहना है कि यदि एक ही बार में सारे देश के ग्रामपंचायत, जिला परिषद, नगरपालिका, मनपा, विधानसभाओं व लोकसभा के चुनाव निपट जाएं तो राजनीति में स्थिरता आ जाएगी. नागरिक भी निश्चिंत हो जाएंगे. उन्हें बार-बार मतदान केंद्र जाकर लाइन लगाकर वोट डालने की झंझट से छुटकारा मिल जाएगा. प्रशासनिक मशीनरी और शिक्षकों को भी इससे तसल्ली होगी. सुरक्षाबलों को बार-बार तैनात नहीं करना पड़ेगा. 'वन नेशन वन इलेक्शन' का मतलब है तुरंत दान महापुण्य!'

हमने कहा, 'भाई चुन्नीलाल, चुनाव लोकतंत्र का पर्व या त्योहार होता है. जब हम सालभर काइ न कोई त्योहार मनाते हैं तो चुनाव भी उत्साहपूर्वक बार-बार कराते रहना चाहिए. इससे राजनीति का चक्र चलायमान रहता है. नेता भी सक्रिय बने रहते हैं. चुनाव सभाओं या रैलियों का इंतजाम करने वालों और किराए की भीड़ लाकर मैदान भरने वालों को रोजगार मिलता है. कार्यकर्ताओं को बार-बार खर्च-पानी के लिए रकम मिलती है. नेताओं को बार-बार गला फाड़कर भाषण देने और एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने का चान्स मिलता है. टीवी पर विभिन्न पार्टियों के प्रवक्ताओं को भड़ास निकालने का अवसर हासिल होता है. हर चुनाव में जनता के टैक्स की रकम से मुफ्त की खैरात बांटने वाली घोषणाएं होती हैं. यदि एक बार में ही सारे चुनाव करा लिए तो इन लोगों का क्या होगा?' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, 'एक राष्ट्र एक चुनाव' से खर्च बचेगा. लोग गया जाकर इसलिए श्राद्ध करते हैं कि एक बार में ही पितरों को मुक्ति मिल जाए. मतदाता भी एक बार वोटिंग करने के बाद 5 साल तक टेंशन फ्री हो जाएंगे. हर साल किसी न किसी चुनाव में उंगली पर स्याही लगाने और ईवीएम की बटन दबाने से छुटकारा मिलेगा.'

हमने कहा, 'यदि एक बार किसी पार्टी की सत्ता आ गई तो वह पूरे 5 साल मनमानी करेगी. उसे अविश्वास प्रस्ताव लाकर गिराने का चान्स नहीं रहेगा क्योंकि अगला चुनाव तो 5 साल बाद ही कराया जाएगा. उद्योगपतियों के सहयोग वाली बड़ी पार्टियों के चुनाव प्रचार का बुलडोजर उन अल्प साधनों वाली छोटी पार्टियों को रौंद देगा, जो एकसाथ देशव्यापी चुनाव का खर्च नहीं उठा सकतीं. विपक्ष कितना ही चिल्लाए, सरकार अंगद के समान पैर जमाकर टिकी रहेगी और टस से मस नहीं होगी !'

शब्द-सागर 12367

- डॉ. सागर खादीवाला

वनस्पतियों का जलीय अंश, आनंद 3. दूसरा देश, विदेश 4. विस्फोटक पदार्थ का बना हुआ गोला 5. हल्का ज्वर, गर्मी 6. हज्जाम 8. गहरा, जिसका कोई तल न हो 10. गाड़ी-रथ आदि चलाना, जानवरों को चलाने या हटाने के लिए आगे बढ़ाना 13. अपनापन, ममता 14. अच्छे रंग वाला, अच्छे रंग का 15. यात्रियों के ठहरने का स्थान 16. चिन्ह, लक्षण 17. सांप 18. किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव 19. द्रव, बहने वाला पदार्थ

बाएं से दाएं
1.तीखे स्वाद वाला तेज मसालेदार 4. प्रवाहित होना, वहन करना 7. कमी, न्यूनता 8. आम का बाग 9. मृत्यु, मारण 11. चेहरा, स्वरूप, बनावट 12. अंधकार, अंधेरा (सं.) 16. मित्र, दोस्त, यार 18. वह विद्या जिसमें प्राचीन काल विशेषत: पूर्व इतिहास काल की वस्तुओं की खोज की जाती है 20. एक प्रकार का मृग बाज, मयूर 21. डरपोक 22. नस 23. बुखार 24. बुरी आदत

ऊपर से नीचे
1. चक्कर खाना, हैरान होना, चकित होना, भ्रांत होना 2. फलों या

Solution 12366

च	म	क	ना	■	जी	म	ना
र	■	■	रा	स	न	शी	न
म	नो	रं	ज	क	■	न	क
पं	क	■	■	प	ता	■	■
थ	■	झ	प	क	ना	■	म
■	न	न	द	■	बा	द	ल
म	ट	का	■	बो	ना	■	म
मी	ना	र	■	र	■	बि	ल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी. मन में उत्साह बना रहेगा. मित्रों के सहयोग से व्यापार में लाभ होगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में दाम्पत्य जीवन में विवाद होगा. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. राजनैतिक विवाद की स्थिति का सामना करना होगा. व्यक्तिगत संबंधों में में सुधार होगा. शिक्षा में व्यवधान आयेगा. वर्ष के अन्त में दौड़धूप होगी. मित्र से विवाद हो सकता है. मतभेद में वृद्धि होगी. अचानक धन लाभ होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन में वाद विवाद होगा. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को राजनीत में विशेष सतर्कता रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को खान पान पर संयम रखना हितकर रहेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सहयोग रहेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, हंसमुख, मिलनसार, अपने कार्य के प्रति सजग रहने वाला ईमानदार होगा. अपने मन की बात दूसरों पर प्रकट नहीं करेगा. मित्रों की संख्या अधिक होगी, किन्तु वास्तविक मित्रों का अभाव रहेगा. दूर दूर घूमने का शौकीन होगा.

मेष- सहयोगी आपकी मेहनत का लाभ उठायेंगे. पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. लाभ होगा. सोचे कामकाज में सफलता मिलेगी.

वृषभ- शारीरिक सुख एवं पारिवारिक शांति के लिये समय अनुकूल रहेगा. जीवनसाथी के सहयोग से अवरोधों का निवारण होगा. पदोन्नति का योग बन सकते हैं.

मिथुन- पारिवारिक मित्रों से मुलाकात सुचाद रहेगी. व्यर्थ के वाद विवाद को टालना हितकर रहेगा. वार्ता उपयोगी एवं लाभदायक सिद्ध होगी.

कर्क- परिजनों पड़ौसियों का अनायास विवाद हो सकता है. कामकाज बनने का योग है. नवीन योजना बनेगी. लाभदायक अवसरों को हाथ से न जाने दें.

सिंह- श्रम साध्य कार्यों में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी. प्रवास का योग है. आमोद प्रमोद पर खर्च होगा. आलस्य को त्यागना हितकर रहेगा.

कन्या- सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी. मन: स्थिति संतोषजनक रहेगी. भाई से मदद प्राप्ति का योग है. कामकाज बनेगा. धर्म कर्म में आस्था बढ़ेगी.

तुला- आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा. व्यापार की योजना बनेगी. अतिथि आगमन होगा. निजी दायित्वों की पूर्ति का योग है.

वृश्चिक- पराक्रम में वृद्धि होगी. नये लोगों के प्रति रूचि रहेगी. अधिक जल्दबाजी न करें. मांगलिक कार्यों में खर्च होगा. परिश्रम अधिक करना होगा.

धनु- अपनों के कारण मुश्किल हो सकती है. आय में कमी होगी. कामकाज में बाधा आने का योग है. परिश्रम की अधिकता रहेगी, खर्च अधिक होगा.

मकर- आज का दिन शुभ एवं अनुकूल रहेगा. सोचे कार्य ठीक ढंग से पूर्ण होंगे. महत्वपूर्ण विचार विमर्श होगा. अतिथि आगमन होगा. प्रसन्नता बनी रहेगी.

कुम्भ- राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी. सोचे कार्य ठीक ढंग से पूर्ण होंगे. महत्वपूर्ण योजनाओं पर विचार विमर्श होगा. व्यर्थ की चिन्ता रह सकती है.

मीन- स्वास्थ्य में सुधार होगा. कुछ नये समाचारों की प्राप्ति होगी. व्यापार व्यवसाय में सुधार होगा. मानसिक संतोष बना रहेगा. प्रापर्टी के कार्य बनेंगे.

उदयकालीन ग्रह चाल

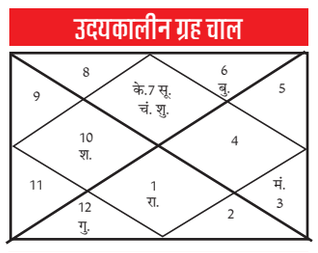

पंचांग

रा.मि. 11 संवत् 2083 भाद्रपद कृष्ण षष्ठी बुधवासरे रात 3/43, भरणी नक्षत्रे रात 2/13, ध्रुव योगे रात 10/36, गर करणे सू.उ. 5/44, सू.अ. 6/16, चन्द्रचार मेष, पर्व- हलषष्ठी व्रत, हरछठ व्रत, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 12 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण षष्ठी को भरणी नक्षत्र के प्रभाव से तांबा, पीतल, एवं कपास, सन् की लाईन, पूर्व की तरह चलेगी. गेहूं, जौ, चना, मोट, मूँग, ज्वार बाजरा, आदि में नरमी रहेगी. वायदा मार्केट में आज के बने भाव उँचे व नीचे महत्वपूर्ण साबित होंगे. भाग्यांक 4853 है.

SUDOKU 7499

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7498

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1